महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा

पीएच.डी. (हिन्दी) पंजीकरण हेतु शोध प्रस्ताव

शोध विषय

# अनामिका के काव्य में स्त्री विमर्श


शोधार्थी

राजेश कुमार खज्जा

हिन्दी विभाग

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा (गुजरात)

शोध निर्देशिका

प्रो. लता सुमंत

हिन्दी विभाग कला संकाय

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा (गुजरात)


वर्ष 2019

## प्रस्तावित शोध समस्या का परिचय एवं महत्व

## प्रस्तावना

नारी के साथ जुड़ा उसका सम्पूर्ण व्यक्तित्व, उसका अस्तित्व, उसकी क्षमता उसकी अस्मिता को लेकर अब नारी सजग जागृत और सचेत हुई है। उसने अपनी पुरातन चार दीवारी को तोड़ा और बाह्य जगत के साथ नाता जोड़ने की कोशिश की है। पुरूष प्रधान समाज में उसके इस निर्णय में यदा-कदा कई व्यवधान सामने आते रहते है, किन्तु स्त्री ने अपने सामने आने वाली मुश्किलों को डटकर सामना करना सीख लिया है। आज की नारी पुरुष के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही है।

हिन्दी साहित्य में अनेक विधाओं में सृजन किया जा रहा है। आधुनिक काल में पद्य साहित्य के साथ ही साथ गद्य साहित्य ने भी अपना स्थान बनाया है किन्तु पद्यात्मक काव्य अपनी पृथक पहचान रखता है। 21वीं शताब्दी में नये साहित्यिक विमर्शों में स्त्री विमर्श प्रमुखता से उभरकर सामने आया है, जबकि कविता विधा में इसका सहज सम्प्रेषणीय रूप बहुत प्रभावी ढ़ग से मुखरित हुआ है।

आधुनिक काल के आते-आते स्त्री चिन्तन की दिशाएँ बदलती नजर आने लगीं एक क्रान्तिकारी परिवर्तन दिखायी देने लगा। आधुनिक काल की प्रगति तक पहुँचने के लिए नारी को अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए निरन्तर संघर्ष करना पड़ा। आधुनिक काल में स्त्री शिक्षा, स्त्री सशक्तिकरण, स्त्री मुक्ति आदि विषय काव्य के केन्द्र में रहे। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की साकेत केवल उर्मिला को ही नहीं उपेक्षित नारी जाति का ध्यान अपनी ओर खींचती है। श्रीधर पाठक की 'बाल विवाह' कविता विधवाओं की व्यथा का करुणाजनक आख्यान है। कामायनी की निम्न पक्तियाँ नारी के अधिकार तथा उसके अस्तित्व का बोध करती है-

''मनु तुम श्रद्धा को गये भूल

उस पूर्ण आत्मविश्वासमयी को उड़ा दिया था समझ तूल।

तुम भूल गये पुरुषत्व मोह में कुछ सत्ता है नारी की।

समझता है सम्बन्ध बनी अधिकार और अधिकारी की।''

महादेवी वर्मा का भी मानना है कि- ''आज हिन्दू स्त्री भी शव के समान ही निस्पन्दन है। संस्कारों ने उसे पक्षाघात के रोगी के समान जड़ कर दिया है। अत: अपने सुख-दुख को चेष्टा द्वारा प्रकट करने में भी वह असमर्थ है।''

समकालीन दौर में कविता तथा अन्य सृजनात्मक क्षेत्रों में नारी की स्वतंत्रता पर बल देने वाला स्वर आज बुलन्द है। शताब्दियों से नारी के प्रति हो रहे शोषण को नारीवाद ने प्रोत्साहन प्रदान किया है। समकालीन कविता को दिशा देने वाले रघुवीर सहाय ने भी माना है कि-

''किसी मूर्ख की हो परिणीता

निज घर बार बसाइए।

होयँ कटीली

आँखें गीली

तड़की सीली, तबीयत ढीली

घर की सबसे बड़ी पतीली

भरकर भात पसारिए।''

अनामिका ने स्त्री जीवन के भीतर के भयावह सच को बहुत सजग ढंग के काव्यानुभूति में परिवर्तित कर एक नये रूप में, नये अर्थ में, आग्रह भरे तेवर के साथ प्रस्तुत किया है। आज हिन्दी साहित्य में अनेक विमर्श केवल स्त्री विमर्श पर आधारित है। जो महिलाओं की स्थिति को बयां करती है। नारी के अस्तित्व की पहचान को ढूँढ़ता स्त्री विमर्श वादी लेखन इसका प्रमुख आधार माना जा सकता है। स्त्रीवादी लेखन और स्त्री विमर्श का आधार ही हमारे शोध के महत्व को प्रतिपादित करता है। क्योंकि स्त्री

आज भी मुक्ति के लिए झटपटा रही है। समकालीन स्त्री कवयित्रियों में शैल कुमारी, मीनाक्षी, रजनी तिलक, चन्द्रकात देवताले, कात्यायनी, प्रभा खेतान आदि प्रमुख है।

हिन्दी कवयित्री अनामिका ने अपनी कविताओं में स्त्री की भूमिका को विविध पहलुओं के माध्यम से स्पष्ट किया है। पारिवारिक और सामाजिक जीवन में स्त्री की क्या छवि है, उसे उकेरा है।

अनामिका की प्रमुख काव्य रचनाएँ- शीतल स्पर्श एक धूप, गलत पते की चिट्ठी, समय के शहर में, बीजाक्षर, अनुष्टुप, कविता में औरत, खुरदुरी हथेलियाँ, दूब धान प्रमुख है। अनामिका ने अपने काव्य में संवादमय शैली, आत्मकथन शैली, मुहावरें और लोकोक्तियों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया है।

**प्रस्तावित शोध का महत्व :**

वरिष्ठ हिन्दी कवयित्री अनामिका ने अपने काव्य में स्त्री की भूमिका को विविध पहलुओं के माध्यम से स्पष्ट किया गया है। पारिवारिक और सामाजिक जीवन में स्त्री की छवि क्या है, उसे उकेरा गया है। साथ ही साथ स्त्री अस्मिता की तलाश को अंकित करने का प्रयत्न किया गया है। नारी से जुड़े मिथक

''नारी केवल सृजनशीलता की मूर्ति है।''

''औरत ही औरत की दुश्मन है।''

आदि अनगिनत तथ्यों को बेबुनियाद साबित किया जा सकता है। यह शोध ऐसे अनेक भ्रामक भ्रान्तियों को तोड़ने में अपना सहयोग प्रदान करेगा।

**शोध कार्य का उद्देश्य**

आज हिन्दी साहित्य में अनेक विमर्श केवल स्त्री विमर्श पर आधारित है। जो महिलाओं की स्थिति को बयां करती है। नारी के अस्तित्व की पहचान को ढूँढता स्त्री वादी लेखन

इसका प्रमुख आधार माना जा सकता है। स्त्री वादी लेखन और स्त्री विमर्श का आधार ही हमारे शोध के महत्व को प्रतिपादित करता है। अनामिका के काव्य में नारी की सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक स्थिति को मुक्त अभिव्यक्ति मिली है। पितृसत्तात्मकता का प्रतिरोध, स्वतंत्र प्रेम संबंध, यौन स्वातंत्र्य, स्त्री मुक्ति, स्त्री अस्मिता की तलाश आदि को उकेरा गया है। नारी का स्व पहले हाशिये पर रख दिया जाता था। वह केवल पुत्री, पत्नी और माँ के रूप में ही स्वीकार्य थी।

अनामिका के काव्य में स्त्री संदर्भ के विविध स्वरूपों को उद्‌घाटित करना है।

1- स्त्री विमर्श को परिभाषित करना।
2- स्त्री विमर्श का सिंहावलोकन वैश्विक परिदृश्य में करना।
3- भारतीय परिवेश में स्त्री विमर्श को परिभाषित करना।
4- हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श को परिभाषित करना।
5- अनामिका के काव्य में स्त्री विमर्श के स्वरूप को उद्‌घाटित करना है।
6- अनामिका के काव्य के माध्यम से समाज में व्याप्त स्त्री स्वरूप में समझना है।
7- अनामिका के काव्य में महिला लेखन की परम्परा में स्त्री छवि को समझना है।
8- अनामिका के काव्य में पुरुष सता के स्वरूप को देखना है।
9- अनामिका के काव्य में स्त्री शोषण की स्थिति का अवलोकन करना है।

अनामिका के काव्य के माध्यम से आधुनिक नारी की स्थिति को समझना है।

**पूर्व में किये गये कार्यों का अवलोकन**

साहित्य में स्त्री विमर्श को लेकर अनेक शोध कार्य हुए है। वर्तमान समय में स्त्री विमर्श से संबंधित जो भी शोधकार्य हो रहे है वह गद्‌य में ज्यादा मिलते है, पद्‌य में प्राय: कम ही देखने को मिलते है। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य में स्त्री विमर्श पर अभी तक जो कार्य हुए है उनमें से प्रमुख है।

अनामिका का काव्य : आधुनिक स्त्री विमर्श, मंजू रस्तोगी, वाणी प्रकाशन, सं0 2015। उक्त पुस्तक में अनामिका के काव्य पर स्त्री विमर्श से संबंधित विचारों को प्रस्तुत किया गया है।

अनामिका अलका सरावगी और महुआ माजी का कथा साहित्य एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, सफीना, एस0ए0, कोच्चिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कोच्चिन 2015। उक्त शोध में अनामिका, अलका सरावणी और मछुआ माजी के कथा साहित्य का तुलनात्मक विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

अनामिका एक मूल्यांकन, अभिषेक कश्यप, सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली, 2013। उक्त किताब में लेखक ने अनामिका के साहित्य का मूल्यांकन प्रस्तुत किया है। गद्य और पद्य साहित्य के स्त्री विमर्श के अतिरिक्त अन्य बिन्दुओं को दर्शाया है।

अनामिका के समग्र साहित्य का अनुशीलन, आरिफ गफूर जमाद, सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर 2012। उक्त शोध ग्रंथ में अनामिका के समग्र साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

इसके अतिरिक्त अनामिका के काव्य में अनछुये स्त्री विमर्श को उकेरा जायेगा। हिन्दी साहित्य में वर्णित स्त्री विमर्श में अनामिका के स्त्री विमर्श को समझना। समकालीन स्त्री विमर्श में अन्य रचनाकारों के साथ अनामिका के स्थान को वर्णित करना।

**प्रस्तावित शोध के क्षेत्र में पहचानी गई शोध रिक्तता**

अनेक शोधार्थियों ने अनामिका के काव्य पर अनेक प्रकार के कार्य किये है किन्तु स्त्री विमर्श को कम ही लोगों ने दर्शाया है। अनामिका के काव्य में स्त्री विमर्श पर शोध कार्य कम ही हुए है। इसीलिए स्त्री विमर्श पर शोध कार्य की अभी और आवश्यकता है।

**परिकल्पना**

प्रस्तावित शोध कार्य 'स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी काव्य में स्त्री विमर्श (अनामिका के संदर्भ

में)' में अनामिका के काव्य में स्त्री विमर्श के आधार पर, स्त्री की सामाजिक स्थिति, आर्थिक स्थिति, पारिवारिक स्थिति और उनके रहन-सहन, खान-पान आदि का अध्ययन किया जायेगा।

**अनुसंधान पद्धतियां एवं शोध विधि**

शोध पद्धति का तात्पर्य उस साधन या माध्यम से है जिसके माध्यम से शोध कार्य को संपन्न किया जायेगा। इस विषय में शोध करते समय समाजशास्त्रीय एवं विश्लेषणात्मक पद्धति को अपनाया जायेगा और स्त्री विमर्श से संबंधित साहित्य का अध्ययन कर उसे अनामिका के काव्य से तुलना की जायेगी। इसके अतिरिक्त अनामिका का काव्य वर्णनात्मक है इसलिए वर्णनात्मक विधि का भी प्रयोग किया जायेगा। शोध हेतु उपयुक्त सामग्री का संकलन किया जायेगा और तथ्यों का विश्लेषण करके निष्कर्ष निकाला जायेगा।

**पुस्तकालय एव शोध संस्थान**

शोध कार्य के लिए निम्न पुस्तकालयों एवं शोध संस्थाओं में जाकर सामग्री का संकलन किया जायेगा।

1. राजकीय गोविन्द गुरु महाविद्यालय, बाँसवाड़ा।
2. राजकीय महिला महाविद्यालय, बाँसवाड़ा।
3. राजकीय जिला पुस्तकालय, बाँसवाड़ा।
4. महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा पुस्तकालय।

**प्रस्तावित शोध कार्य की रूपरेखा**

## प्रथम अध्याय :

## स्त्री विमर्श अर्थ एवं स्वरूप

1.1 स्त्री विमर्श का अर्थ एवं परिभाषा

1.2 स्त्री विमर्श का इतिहास

1.3 स्त्री विमर्श की भारतीय अवधारणा

1.4 स्त्री विमर्श की पाश्चात्य अवधारणा

1.5 स्त्री विमर्श की भारतीय एवं पाश्चात्य अवधारणा में अन्तर

## द्वतीय अध्याय :

## हिन्दी कविता में स्त्री विमर्श

2.1 हिन्दी कविता में स्त्री विमर्श का स्वरूप

2.2 वैदिक काल एवं आदि काल में स्त्री विमर्श

2.3 भक्तिकाल में स्त्री विमर्श

2.4 रीतिकाल में स्त्री विमर्श

2.5 आधुनिक काल में स्त्री विमर्श

## तृतीय अध्याय :

## अनामिका का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

3.1 जन्म, माता-पिता पूर्वज आदि

3.2 शिक्षा, विवाह, संतति

3.3 अनामिका का गद्य साहित्य

3.4 अनामिका का पद्य साहित्य

3.5 अनामिका का अन्य साहित्य

## चतुर्थ अध्याय :

## अनामिका के काव्य में वैयक्तिक परिप्रेक्ष्य में स्त्री विमर्श

4.1 अस्मिताबोध

4.2 यौन स्वातंत्र्य स्त्री

4.3 स्त्री मुक्ति

4.4 भूमण्डीकरण का प्रभाव

4.5 आशावादिता

4.6 वैयक्तिक प्रेम

4.7 पारिवारिक संबंध

**पंचम अध्याय :**

**अनामिका के काव्य में स्त्री का व्यक्तिगत जीवन**

5.1 प्रथम स्राव

5.2 गर्भिणी स्त्री

5.3 प्रसवकालीन स्त्री

5.4 अन्तिम स्राव

**षष्ठम अध्याय :**

**अनामिका के काव्य की सृजन समीक्षा**

**6**.1 संवेदनात्मक चित्रण

6.2 समस्यात्मक चित्रण

6.3 परिस्थिति चित्रण

6.4 यथार्थ चित्रण

**सप्तम अध्याय :**

**हिन्दी काव्य में स्त्री विमर्श कवयित्री और अनामिका का स्थान**

7.1 हिन्दी काव्य में स्त्री वादी प्रमुख कवयित्री

7.2 हिन्दी काव्य में स्त्री वादी कवयित्री में अनामिका का स्थान

**उपसंहार**

# सन्दर्भ ग्रंथ सूची


**आधार ग्रंथ**

अनामिका : शीतल स्पर्श एक धूप को, अमिताभ प्रकाशन बिहार, 1975

गलत पते की चिट्ठी, बिहार ग्रथ कुटीर, पटना, 1979

समय के शहर में, पराग प्रकाशन दिल्ली, 1990

बीजाक्षर, भूमिका प्रकाशन दिल्ली, 1993

अनुष्टुप, किताब घर प्रकाशन, दिल्ली, 1998

खुरदुरी हथेलियां, राधा कृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, 2005

दूब-धान, भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली, 2007

अनामिका (कवि ने कहा) किताबघर दिल्ली, 2008

**सहायक ग्रंथ**

अनामिका, स्त्री मुक्ति : साझा चूल्हा, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, दिल्ली, सं0 2010

अनामिका, स्त्री विमर्श का लोकपथ, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, सं0 2012

अर्चना वर्मा, अस्मिता विमर्श का स्त्री स्वर, मेधा बुक्स, दिल्ली, सं0 2008

डा0 ऋषभदेव शर्मा, डॉ0 कविता वाचक्नवी, स्त्री सशक्तिकरण के विविध आयाम, गीता प्रकाशन हैदराबाद 2004

डॉ0 के0 एम मालती, स्त्री विमर्श : भारतीय परिप्रेक्ष्य, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, सं0 2014

के0 वनजा, इको-फेमिनिज्म, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, स02013

प्रो0 कमला प्रसाद, राजेन्द्र प्रसाद, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, 2014

गोपाल जी गुप्त, वैदिक एवं पुराणकालीन हिन्दू नारियाँ, पुस्तक महल, दिल्ली, सं0 2009

गीताश्री, अरुणा सिंह, स्त्री को पुकारता है स्वप्न, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, सं0 2013

तसलीमा नसरीन, औरत का कोई देश नहीं, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, सं0 2013

नासिरा शर्मा, औरत के लिए औरत (नारी विमर्श) सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली, 2007

राजकिशोर, स्त्री के लिए जगह, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, सं0 2014

राजकिशोर, स्त्री परंपरा और आधुनिकता, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, सं0 2010

राधा कुमार, स्त्री संघर्ष का इतिहास, 1800-1990, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, सं0 2014

रोहिणी अग्रवाल, साहित्य की जमीन और स्त्री मन के उच्छ्वास, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, सं0 2014

विजय शर्मा, अफ्रो-अमेरिकन साहित्य स्त्री स्वर, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, सं0 2014

मंजु रुस्तगी, आधुनिक स्त्री विमर्श अनामिका का काव्य, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, 2015

**पत्र पत्रिकाएँ**

अक्सर, जयपुर

आलोचना नई दिल्ली

कथादेश, दिल्ली

जनपथ, भोजपुर

तदभव, लखनऊ

नया ज्ञानोदय, नई दिल्ली

नव सृजन, उदयपुर

पक्षधर, नई दिल्ली

प्रतिमान, दिल्ली

फिलहाल, पटना

समकालीन सृजन, कोलकाता

समसामयिक सृजन, नई दिल्ली

वेदांजली, वाराणसी

शब्दार्णव, वाराण्सी

शोधार्णव, उरई

कृतिका, उरई

स्पंदन, उरई

शोध धारा, उरई

समवेत, उदयपुर

सरस्वती सुमन, देहरादून

पंचशील शोध समीक्षा जयपुर

**समाचार पत्र**

राजस्थान पत्रिका

दैनिक भास्कर

अमर उजाला

जन सत्ता

आज

दैनिक जागरण

समस्त प्रिन्ट व इलेक्ट्रानिक मीडिया एवं इन्टरनेट पर उपलब्ध सामग्री

| | | |
|---|---|---|
| हस्ताक्षर शोधनिर्देशक | हस्ताक्षर विभागाध्यक्ष | शोधार्थी के हस्ताक्षर |
| दिनांक एवं मुहर | दिनांक एवं मुहर | दिनांक |